श्री महावीराय नमः   जैनं जयति शासनम्   श्रीमत् सुदर्शन गुरवे नमः

जैन संस्कार शिविर
पाठ्यक्रम भाग-1

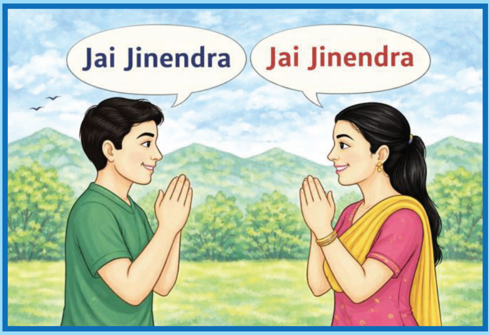

जैन संस्कार शिविर समिति

A step for the Jain youth of tomorrow

संस्करण : 2026

प्रकाशकीय

भारत देश उच्च संस्कृति वाला देश रहा है और इस संस्कृति की उज्ज्वलता बनाये रखने हेतु विभिन्न समाजों में बच्चों व युवाओं को नैतिक व धार्मिक संस्कार प्रदान करने के प्रयास चलते रहते हैं।

पूज्य गुरुदेव संघ-शास्ता शासन-प्रभावक श्री सुदर्शन लाल जी म. सा. के मुनि-संघ के महामुनिराज महास्थविर, गणाधीश श्री प्रकाश चन्द्र जी म., संघनायक 'शास्त्री' श्री पद्मचन्द्र जी म., संघ संचालक मनोहर व्याख्यानी श्री नरेश मुनि जी म. तथा इनके संघवर्ती अन्य विद्वान् मुनिराजों एवं महासतियों के कृपापूर्ण आशीर्वाद से 'जैन संस्कार शिविर समिति, दिल्ली' द्वारा सन् 2012 से उत्तर भारत के कई प्रान्तों में स्थानीय एस. एस. जैन सभाओं के सहयोग से जैन-संस्कार-शिविर लगाए जा रहे हैं। ये शिविर पूर्णरूप से सम्प्रदाय-निरपेक्ष हैं।

इस पुस्तक के निर्माण में अनेक पूज्य गुरु भगवन्तों व विभिन्न लेखकों की रचनाओं का विनम्र सहयोग लिया गया है। हम उन सब के हृदय से आभारी हैं।

इस पुस्तक को प्रत्येक बच्चा सूक्ष्मता से पढ़े, समझे और उस पर आचरण करे। हमें आशा है कि यह पुस्तक बच्चों तथा युवाओं को जैन धर्म के संस्कार देने में सफल रहेगी।

इसी मंगल मनीषा के साथ...

रवीन्द्र जैन
शिविर-संयोजक

प्रकाशक :

जय जिनशासन प्रकाशन
212, वीर अपार्टमैन्टस्, सैक्टर 13,
रोहिणी, दिल्ली-110 085
Mob: +91-98102 87446
Email : jaijinshaasanprakaashan@gmail.com

रूपांकन :

सिस्टम्स् विज़न, नई दिल्ली
Mob: +91-98102 12565

मुद्रक :

पारस ऑफसैट प्रा. लि., दिल्ली
Email: info@parasoffset.com

विषयक्रम

शीर्षक | पृष्ठ संख्या

सूत्र विभाग

नवकार मन्त्र 2
गुरु-वन्दन—(तिक्खुत्तो) सूत्र 3

तत्त्व विभाग

तीर्थ और तीर्थंकर 4
24 तीर्थंकर भगवानों के नाम 5
गति चार 6
इन्द्रिय पांच 9
जाति पाँच 11
स्थानकवासी साधु-साध्वियों के नियम 13
चार सम्प्रदाय 14

सामान्य ज्ञान

Hi-Hello छोड़िए—जय जिनेन्द्र बोलिए 16
नौ पुण्य 17
BAD DEEDS 21
जैन बालक–बालिका की पहचान 25
जैन ध्वज तथा प्रतीक-चिन्ह 27

कथा विभाग

भगवान् महावीर स्वामी 29
भ. महावीर के जीवन पर आधारित कहानियाँ 31

काव्य विभाग

JAIN POEM 36
Lord Mahavira 36

प्राकृत विभाग

प्राकृत भाषा की वर्णमाला 37
व्यावहारिक वाक्य 38
जैन आगमों के मुख्य सूत्र 39

नवकार मन्त्र

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं,
नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्व साहूणं ॥
एसो पंच नमोक्कारो, सव्व-पावप्पणासणो ।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ॥

ऐसा शब्द-समूह, जिसमें अक्षर थोड़े और भाव अधिक हों, मन्त्र कहलाता है। जैन धर्म का सर्व-प्रमुख मन्त्र नवकार मन्त्र है। इसे नमोकार मन्त्र, नमस्कार सूत्र या पंच-परमेष्ठी-मन्त्र भी कहते हैं।

भावार्थ :

अरिहन्तों को नमस्कार। सिद्धों को नमस्कार। आचार्यों को नमस्कार। उपाध्यायों को नमस्कार। विश्व में सभी साधुओं को नमस्कार।

ऐसे पांच को नमस्कार हमारे लिए सब पापों का नाशक व मंगलकारी है। सभी मंगलों में प्रथम मंगल है।

अरिहन्त: (Conquerors of Attachment & Hate),
सिद्ध : (Liberated Souls),
आचार्य: (Preceptors),
उपाध्याय: (Teachers of Knowledge),
साधु: (Sages)

गुरु-वन्दन—(तिक्खुत्तो) सूत्र

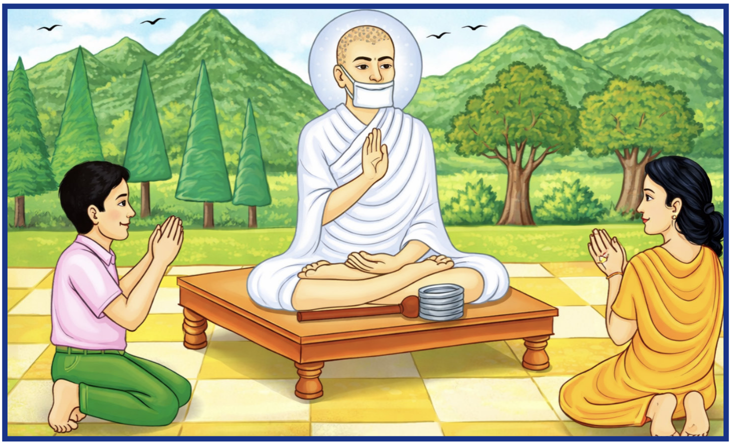

तिक्खुत्तो, आयाहिणं, पयाहिणं, करेमि,
वंदामि, नमंसामि, सक्कारेमि, सम्माणेमि,
कल्लाणं, मंगलं, देवयं, चेइयं पज्जुवासामि, मत्थएण वंदामि ।

भावार्थ :

हे भगवन्! मैं दाहिनी ओर से प्रारम्भ करके पुनः दाहिनी ओर तक आपकी तीन बार प्रदक्षिणा करता हूँ। स्तुति करता हूँ, नमस्कार करता हूँ, सत्कार करता हूँ, सम्मान करता हूँ।

आप कल्याण रूप हैं, मंगल रूप हैं, आप धर्मदेव हैं, चैत्य-स्वरूप अर्थात् ज्ञान-स्वरूप हैं।

गुरुदेव ! आपकी (मन, वचन और शरीर से) पर्युपासना अर्थात सेवा भक्ति करता हूँ। विनय-पूर्वक मस्तक झुकाकर आपके चरण-कमलों में वन्दना करता हूँ।

तीर्थ और तीर्थंकर

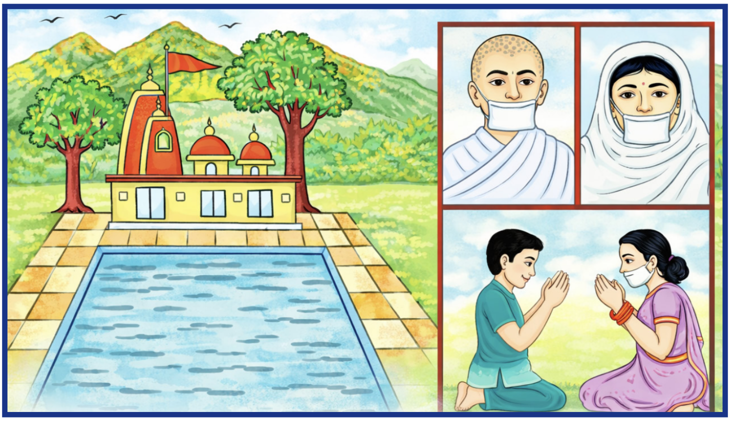

किसी भगवान्, ऋषि, मुनि या महापुरुष के जीवन-वृत्त से जुड़े स्थान को, या किसी चमत्कारी वृक्ष, नदी, पर्वत, मूर्ति या मन्दिर आदि से युक्त स्थान को लोग 'तीर्थ' नाम से पुकारते हैं।

दुनिया में हर धर्म व हर जाति के अपने-अपने विशिष्ट तीर्थ स्थान हैं। ये सभी 'द्रव्य तीर्थ' कहलाते हैं। एक और भी तीर्थ है, जो 'भाव तीर्थ' या 'आध्यात्मिक तीर्थ' कहलाता है।

जिस धर्ममय आचरण से इस जन्म-मरण-रूप संसार का अन्त हो, या इस दुख-पूर्ण संसार-रूपी समुद्र का किनारा प्राप्त हो, वह धार्मिक आचरण 'भाव तीर्थ' कहलाता है।

ऐसा तीर्थ चार प्रकार का है।

साधु का धर्म, साध्वी का धर्म, श्रावक का धर्म और श्राविका का धर्म।

साधु-साध्वी का धर्म पंच महाव्रत-रूप है, श्रावक-श्राविका का धर्म 12 व्रत-रूप है।

इस चार प्रकार के धर्म का पालन करने से, भाव तीर्थ भी चार प्रकार के हुए — साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविका।

इन चार प्रकार के तीर्थों की स्थापना करने वाले महापुरुष (भगवान्) तीर्थंकर कहलाते हैं। जैन इतिहास में ऐसे कुल 24 तीर्थंकर हुए। इन्होंने अपने-2 समय में पूर्वोक्त चार तीर्थों की स्थापना की।

प्रथम तीर्थंकर भगवान् ऋषभदेव थे तथा 24 वें तीर्थंकर भगवान् महावीर स्वामी जी हुए।

24 तीर्थंकर भगवानों के नाम

1. ऋषभदेव जी
2. अजितनाथ जी
3. संभवनाथ जी
4. अभिनन्दन जी
5. सुमति नाथ जी
6. पद्मप्रभ जी
7. सुपार्श्वनाथ जी
8. चंद्रप्रभ जी
9. सुविधिनाथ जी
10. शीतलनाथ जी
11. श्रेयांसनाथ जी
12. वासुपूज्य जी
13. विमलनाथ जी
14. अनन्तनाथ जी
15. धर्मनाथ जी
16. शान्तिनाथ जी
17. कुन्थुनाथ जी
18. अरनाथ जी
19. मल्लिनाथ जी
20. मुनिसुव्रत जी
21. नमिनाथ जी
22. अरिष्टनेमि जी
23. पार्श्वनाथ जी
24. महावीर स्वामी जी

जैन धर्म का ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रयुक्त कुछेक शब्दों की संक्षिप्त व कुछेक शब्दों की विस्तृत जानकारी:—

गति 4	जाति 5	काय 6	इन्द्रिय 5	पर्याप्ति 6	प्राण 10	शरीर 5
योग 15	उपयोग 12	कर्म 8	गुणस्थान 14	5 इंद्रियों के 23 विषय + 240 विकार	मिथ्यात्व के 10 भेद	छोटी नव तत्त्व के 115 भेद
आत्मा 8	दण्डक 24	लेश्या 6	दृष्टि 3	ध्यान 4	षट द्रव्य के 30 भेद	राशि 2
श्रावक के 12 व्रत	साधु जी के 5 महाव्रत	प्रत्याख्यान के 49 भांगे	चारित्र 5			

गति चार

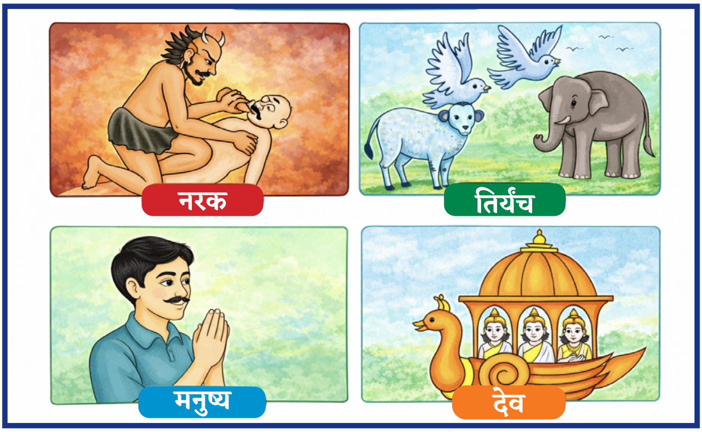

संसार में जितनी भी वस्तुएं हैं, वो दो तरह की है (1) जीव (Living Being) और (2) अजीव (Non Living)

जीव (Living Being):—

जिसमें Life होती है, जिसमें जानने की, सुख दुःख अनुभव करने की शक्ति हो, उसे जीव कहते हैं।

जीवों के मुख्य रूप:—

हम पूरे ब्रह्मांड (Universe) में जीवों को 2 Category में बांट सकते हैं—पहले हैं शरीर धारी जीव Like मनुष्य, पशु, पक्षी आदि और 2nd category के जीव अशरीरी होते हैं जो कि सिद्ध कहलाते हैं। हम उन्हें देख नहीं सकते हैं। शरीरी जीव ही बार-2 जन्म मरण (Birth-Death-Birth) करते रहते हैं।

संसारी आत्मा, जिन स्थानों पर जन्म-मरण करती है, वे स्थान गति कहलाते हैं। शरीरी जीव जहां-जहां भी जन्म-मरण करते हैं, उनके आधार पर उन्हें 4 Category में बांट दिया है, जिन्हें हम गति कहते हैं और ये चार हैं: मनुष्य, देव, तिर्यंच, नारकी।

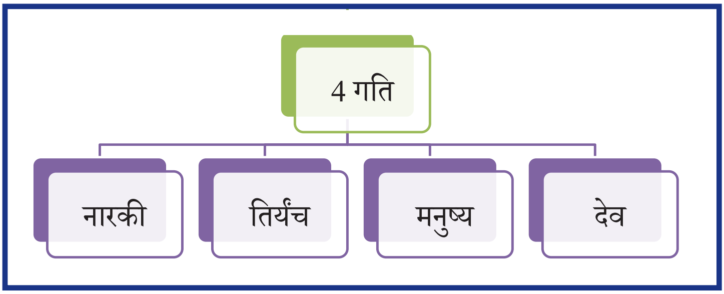

जैसे हम जब किसी पार्क में झूले झूलते हैं और उसमें कभी नीचे, कभी बीच में, कभी ऊपर जाते रहते हैं, उसी प्रकार हम जैसे जीव इन 4 गतियों में चक्कर काटते रहते हैं। यानि कभी हम मनुष्य बनते हैं, कभी मनुष्य से नरक, तिर्यंच या देव बनते रहते हैं।

अब हम इन 4 गतियों के बारे में जानेगें।

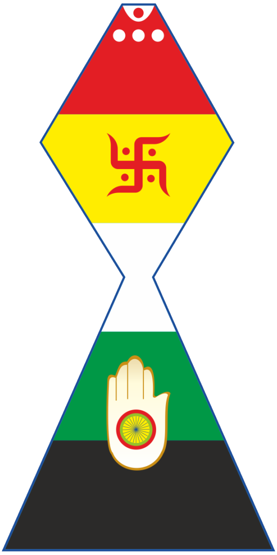

1. नरक गतिः

यह स्थान जैन धर्म के Universe Map के अनुसार नीचे के भाग (Lower Part of Universe) में है यहां पर जन्म लेने वाले जीव नरक गति के जीव कहलाते हैं। उन्हें हम नारकी भी कहते हैं। नारकी जीव भी 7 Category के होते हैं, यानि पहले नरक से लेकर 7वीं नरक तक के जीव। हम उन्हें देख नहीं सकते हैं।

2. तिर्यंच गतिः

यह स्थान लोक के मध्य भाग (Middle Part of the Universe) में स्थित है। पशु, पक्षी, कीट, जानवर, पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु तथा वनस्पति आदि के जीव तिर्यंच गति के जीव कहलाते हैं।

3. मनुष्य गतिः

यह स्थान भी लोक के मध्य भाग (Middle Part of the Universe) में ही है। हम सब मानव (Human Being) मनुष्य गति के जीव कहलाते हैं।

4. देव गति :

यह स्थान मुख्य रूप से लोक के ऊपर के भाग (Upper Part of Universe) में है। कुछ देव लोक के मध्य व नीचे के भाग में भी रहते हैं। इस में जन्म लेने वाले जीव देव या देवता कहलाते हैं। ऊपरी भाग के देवों की 26 categories हैं।

इन चार गति के जीवों के भिन्न-भिन्न दृष्टिकोणों से 1 से 563 तक भेद हैं। जो जीव सब कर्मों का क्षय करके, मोक्ष प्राप्त कर लेते हैं, वे सिद्ध भगवान् कहलाते हैं। सिद्ध गति को केवल मनुष्य गति के जीव ही प्राप्त कर सकते हैं, अन्य तीन गतियों के नहीं।

इन्द्रिय पांच

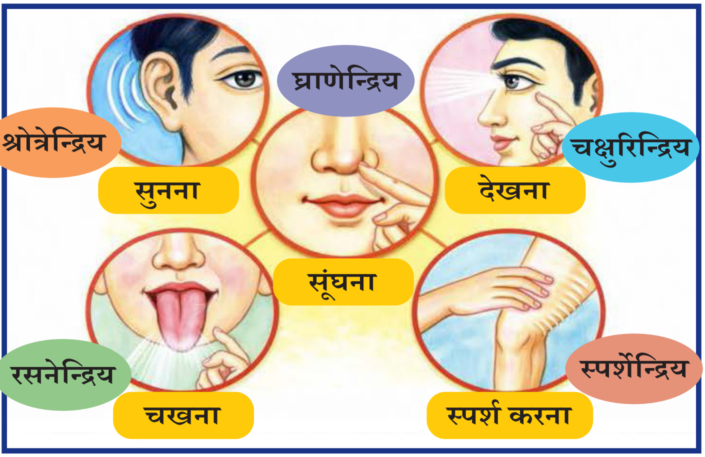

जिन साधनों या अंगों के द्वारा हमारी आत्मा कुछ ज्ञान प्राप्त करती है, उन्हें हम इन्द्रियाँ कहते हैं। (Through which organs, our soul get some Knowledge are called Senses)

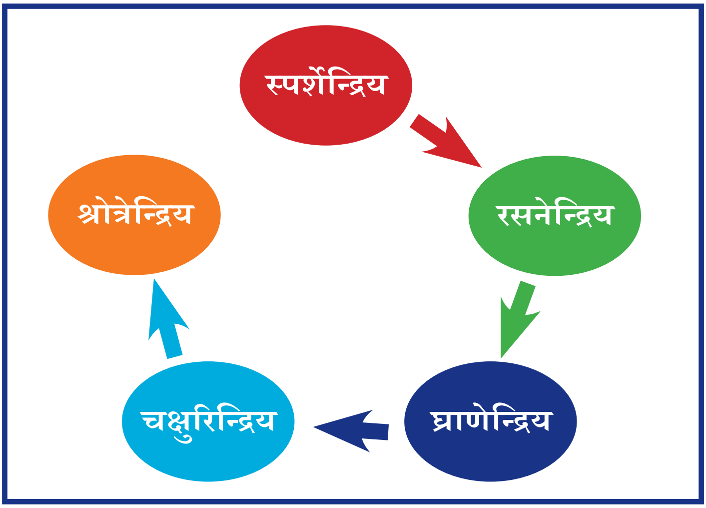

स्पर्शन इन्द्रिय (Touch Sense):

इस से जीव को पदार्थों के शीत (Cold), उष्ण (Hot), हल्का (Light), भारी (Heavy) आदि स्पर्शों का ज्ञान होता है। इसे त्वचा (Skin) भी कहते

हैं। इसमें हमारे शरीर के सभी अंग हाथ पैर आदि आ जाते हैं।

रसना इन्द्रिय (Tongue Sense):

इस से जीव को खट्टे-मीठे, कड़वे, चरचरे आदि रसों का ज्ञान होता है। इसे जिह्वा भी कहते हैं।

घ्राण इन्द्रिय (Nose Sense):

इस से जीव को अच्छी या बुरी गंध का ज्ञान होता है। इसे नाक भी कहते हैं।

चक्षु इन्द्रिय (Eyes Sense):

इस से जीव को काले, नीले, पीले आदि रंगों का ज्ञान होता है। आँखों से हम देखते हैं, पढ़ते हैं।

श्रोत्र इन्द्रिय (Ears Sense):

इसे कान भी कहते हैं। इससे शब्दों का ज्ञान होता है। हम कान से सुनते हैं।

इन पाँच के अतिरिक्त मन भी एक इन्द्रिय है। वह दिखाई नहीं देता, पर शरीर के कण-कण में व्याप्त है, इसलिए उसे ‘अंतःकरण’ कहते हैं। यह विभिन्न विषयों का चिंतन करता है।

जाति पाँच

इस लोक के जीवों के इन्द्रियों के अनुसार वर्गीकरण को जाति कहते हैं।

यह आत्मा 5 इन्द्रियों (Skin, Tongue, Nose, Eyes, Ears) के द्वारा ज्ञान प्राप्त करती है और जब तक यह मुक्त (Liberated) नहीं होती, कोई न कोई शरीर धारण करती है और शरीर धारण करते समय यह आत्मा कभी एक इन्द्रिय (Sense) वाला शरीर ग्रहण करती है, कभी दो, कभी तीन, कभी चार और कभी पाँच इन्द्रिय वाला शरीर धारण करती है। अतः हमनें ऐसे जीवों के समूह (Group), जिनके सिर्फ एक (Sense) है, उसे एकेन्द्रिय जीव कह दिया है और 5 इन्द्रिय वाले जीव को पंचेन्द्रिय जीव कहा है।

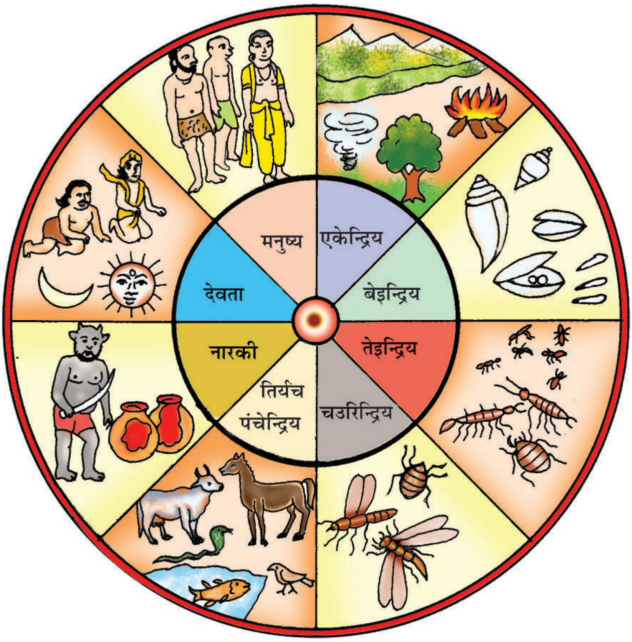

एकेन्द्रिय (Skin) जीवः

पानी, अग्नि, वनस्पति, पृथ्वी, वायु आदि

बेइन्द्रिय (Skin & Tongue) जीवः

लट, केंचुआ आदि

तेइन्द्रिय (Skin, Tongue, Nose) जीवः

चींटी, खटमल आदि

चउरिन्द्रिय (Skin, Tongue, Nose, Eyes) जीवः

मक्खी, मच्छर आदि

पंचेन्द्रिय (skin, tongue, nose, eyes, ears) जीवः

मनुष्य, पशु, पक्षी, देवता

स्थानकवासी साधु-साध्वियों के नियम

जब भी कोई भी व्यक्ति जैन साधु या साध्वी बनता है तो पाँच महाव्रतों को ग्रहण करता है और उन्हें सम्पूर्ण जीवन निभाता है। यह 5 महाव्रतों का नियम चारों सम्प्रदाय के साधुओं व साध्वियों पर लागू होता है और इन्हीं 5 महाव्रतों में जैन साधु की आचार संहिता (Code of Conduct) आ जाती है। फिर भी इन महाव्रतों के पालन हेतु कुछ उपनियम (Sub Rules-समाचारी) चारों सम्प्रदायों के अपने-अपने हैं। अतः निम्नलिखित नियम स्थानकवासी साधु-साध्वियों के पालन हेतु बताए जा रहे हैं।

1. मुख पर श्वेत मुखवस्त्रिका लगाते हैं, श्वेत वस्त्र धारण करते हैं और हाथ में रजोहरण रखते हैं।
2. नंगे पैर पैदल चलते हैं और दिन के समय ही चलते हैं।
3. गृहस्थों के घर से 42 दोष टालकर भोजन लेते हैं।
4. रात्री में किसी भी प्रकार का आहार,पानी व दवाई आदि भी नहीं लेते हैं।
5. वर्ष में एक या दो बार सिर के बालों का हाथ से लोच करते हैं।
6. साधु स्त्री को व साध्वी पुरुष को स्पर्श नहीं करती
7. अपने पास किसी भी प्रकार की सम्पत्ति नहीं रखते हैं।

चार सम्प्रदाय

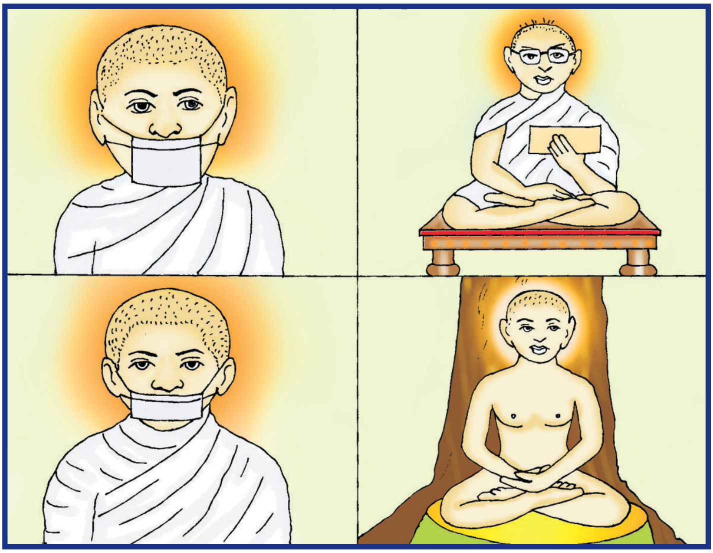

किसी धर्म की शाखा या विभाग को सम्प्रदाय कहते हैं। भगवान् महावीर स्वामी के युग में जैन धर्म की कोई शाखा या सम्प्रदाय नहीं था। भगवान् महावीर के निर्वाण के 600 वर्ष बाद सम्प्रदाय बने।

आज जैन धर्म के चार सम्प्रदाय हैं। सन् 2025 में इनके साधु-साध्वियों की संख्या कोष्ठक (Bracket) में लिखी गई है—

1. स्थानकवासी (4302), 2. तेरापन्थी (716) 3. मूर्तिपूजक (12008) 4. दिगम्बर (852) (कुल योग : 18878)

चार सम्प्रदाय में बाह्य रूप से कुछ विभिन्ताएं हैं—

1. इनमें स्थानकवासी, तेरापन्थी व मूर्तिपूजक सम्प्रदाय के मुनि वस्त्र धारण करते हैं। दिगम्बर नग्न रहते हैं।

2. इनमें स्थानकवासी व तेरापन्थी डोरी वाली मुखवस्त्रिका लगाते हैं। मूर्तिपूजक सम्प्रदाय के मुनि बिना डोरी की रूमाल की तरह

मुखवस्त्रिका हाथ में रखते हैं। दिगम्बर सम्प्रदाय के मुनि मुखवस्त्रिका नहीं लगाते।

3. इनमें स्थानकवासी व तेरापन्थी मूर्ति-पूजा नहीं करते। मूर्तिपूजक व दिगम्बर सम्प्रदाय में मूर्ति-पूजा करते हैं।

चारों सम्प्रदायों में अनेक बातों में पूर्ण समानता भी है, यथा

1. नवकार मन्त्र 2. अहिंसा परमो धर्मः 3. चौबीस तीर्थंकर 4. क्षमा पर्व 5. चार तीर्थ 6. मुनि दीक्षा 7. नंगे पैर, पैदल विहार 8. कर्म-सिद्धान्त, 9. भिक्षाचर्या 10. केश-लोच 11. चातुर्मास 12. प्रतिक्रमण सूत्र 13. तत्त्वार्थ, भक्तामर आदि सूत्र और स्तोत्र 14. मोक्ष-गमन आदि।

Hi-Hello छोड़िए—
जय जिनेन्द्र बोलिए

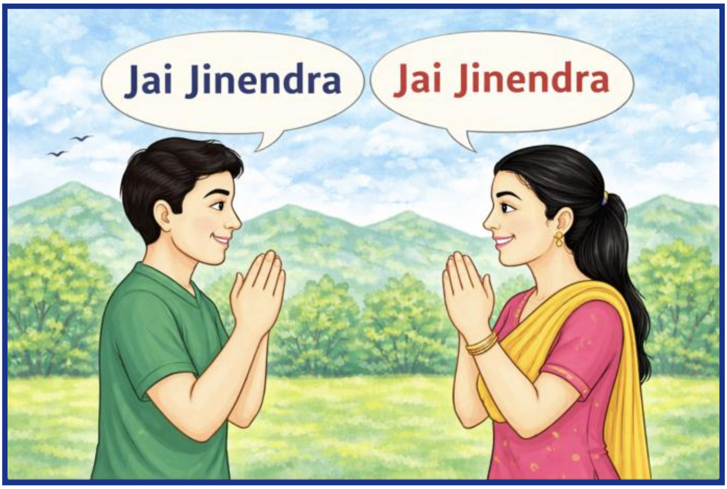

विभिन्न धर्मों को पालन करने वाले लोग अपने-अपने तरीके से अभिवादन करते हैं :—

जैन (Jain)	:	जय जिनेन्द्र
हिन्दू (Hindu)	:	नमस्ते, राम-राम, राधे-राधे, हरे कृष्णा
मुस्लिम (Muslim)	:	अस्सलाम आलेकुम वालेकुम अस्सलाम
सिक्ख (Sikh)	:	सत श्री अकाल, वाहेगुरु
ईसाई (Christian)	:	Hello, Good Day
बुद्ध (Buddhist)	:	नमो बुद्धा
Spanish	:	Hola होला
French	:	Bonjour बोनजू

नौ पुण्य

जैन धर्म में एक बालक, बालिका, श्रावक या श्राविका को निम्नलिखित कार्य करने चाहिए, जिन्हें हम नौ पुण्य या GOOD DEEDS कह सकते हैं।

9 Good Deeds
(जैन धर्म में जिन्हें करना चाहिए)

अन्न पुण्य

भोजन खिलाना।

1

पक्षियों को दाना डालना।

गाय को खाना खिलाना।

गरीबों को खाना खिलाना।

पान पुण्य

पानी पिलाना।

2

पशु-पक्षियों का Bowl रखना।

प्यासे को पानी पिलाना।

पौधों को पानी देना।

लयन पुण्य

रहने के लिए स्थान बनवाना।

3

Animal Shelter बनवाना।

Homeless Shelter बनवाना।

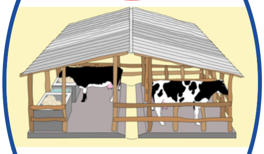

गौशाला बनवाना।

शयन पुण्य
विश्राम के लिए जगह देना।

वस्त्र पुण्य
वस्त्र देना।

मन पुण्य
मन से भला सोचना।

7. वचन पुण्य

अच्छे वचन बोलना।

God Bless U!

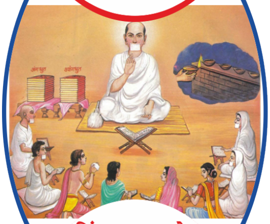

चिंता मत करो, सब अच्छा होगा।

May I Help U ?

8. काय पुण्य

शरीर से सेवा करना।

Donating Blood / Organ.

बीमार की सेवा करना।

मां-बाप की सेवा करना।

9. नमस्कार पुण्य

प्रणाम करना।

गरीब का सम्मान करना।

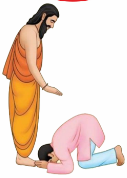

अपने गुरु को प्रणाम करना।

मां-बाप को प्रणाम करना।

1. अन्न पुण्य— भोजन खिलानाः पक्षियों को दाना डालना। पशुओं को खाना खिलाना। गरीबों को खाना खिलाना।

2. पान पुण्य— पानी पिलानाः पशु-पक्षियों के लिए bowl में पानी रखना। प्यासे को पानी पिलाना। पौधों को पानी देना।

3. लयन पुण्य— रहने के लिए स्थान बनवानाः Animal Shelter बनवाना। अनाथ आश्रम बनवाना।

4. शयन पुण्य— विश्राम के लिए जगह देनाः अतिथि घर बनवाना, धूप से बचने के लिए Shed लगवाना। पार्क में बेंच लगवाना

5. वस्त्र पुण्य— वस्त्र देनाः अनाथाश्रम में वस्त्र बाँटना। सर्दी में कम्बल बाँटना। जरूरतमंद को Gift में कपड़े देना।

6. मन पुण्य— मन से भला सोचनाः मैं किसी की कैसे सहायता कर सकता हूँ। सर्वे भवन्तु सुखिनः। हे भगवन्! सामने वाले का दुःख कम हो !

7. वचन पुण्य— अच्छे वचन बोलना: God Bless You !, May I help You!, Don't worry, every thing will be right!

8. काय पुण्य— शरीर से सेवा करनाः Donating Blood/Organ., बीमार की सेवा करना। मां-बाप की सेवा करना।

9. नमस्कार पुण्य— प्रणाम करनाः जय जिनेन्द्र , गरीब का सम्मान करना। अपने गुरु को प्रणाम करना, मां-बाप को प्रणाम करना।

BAD DEEDS

जैन धर्म में एक बालक, बालिका, श्रावक या श्राविका को निम्नलिखित कार्य से हमेशा बचना चाहिए , जिन्हें हम BAD DEEDS कह सकते हैं।

9 Bad Deeds
(जैन धर्म में जिन्हें नहीं करना चाहिए)

Violence
हिंसा करना।

1

चींटी को मारना।

मच्छर को मारना।

किसी को बुरी तरह से डराना।

Telling Lie
झूठ बोलना।

2

कुछ चीज पाने के लिए।

एक-दूसरे को फँसाने के लिए।

सजा से बचने के लिए।

Stealing
चोरी करना।

3

पर्स चुराना।

दुकान से चीजें चुराना।

Stealing an Idea.

Abusing
गाली देना।

4

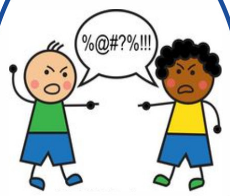

अपशब्द
बोलना।

किसी को
नीचा दिखाना।

किसी का
बुरा सोचना।

Fighting
लड़ाई करना।

5

थप्पड़, मुक्का,
लात मारना।

ऊँची-2
आवाज़ में लड़ना।

Cold War.

Cheating
धोखा करना।

6

Cheating
in games.

Cheating
in exams.

Fraud
of money
in office.

Disrespecting the Elders

बड़ों का अनादर करना।

7

Shouting on Elders.

अध्यापक का सम्मान न करना।

Not offering seats to elders.

Misuse of Mobile

मोबाईल का गलत प्रयोग करना।

8

Misuse in Examination.

Playing Violent games in mobile.

गलत चीजें देखना।

Spreading Dirt

गंदगी फैलाना।

9

घर को गंदा रखना।

Public Place को गंदा करना।

Not keeping your surroundings clean.

1. Violence—हिंसा करना: जैसे: चींटी को मारना किसी को बुरी तरह से डराना।

2. Telling Lie—झूठ बोलना: जैसे: कुछ चीज पाने के लिए, एक-दूसरे को फँसाने के लिए, सजा से बचने के लिए।

3. Stealing—चोरी करना: जैसे: पर्स चुराना, दुकान से चीजें चुराना, किसी का कुछ आईडिया चुराना

4. Abusing—गाली देना: जैसे: अपशब्द बोलना, किसी को नीचा दिखाना।

5. Fighting—लड़ाई करना: जैसे: थप्पड़, मुक्का, लात मारना, ऊँची-2 आवाज़ में लड़ना।

6. Cheating—धोखा करना: जैसे: Cheating in games, Cheating in exams. Fraud of money in office.

7. Disrespecting the Elders: बड़ों का अनादर करना जैसे: shouting on Elders. अध्यापक का सम्मान न करना।

8. Misuse of Mobile—मोबाईल का गलत प्रयोग करना: जैसे: Misuse in Examination., Playing Violent games in mobile, गलत चीजें देखना।

9. Spreading Dirt—गंदगी फैलाना जैसे: घर को गंदा रखना: Public Place को गंदा करना, Not keeping your surroundings clean.

जैन बालक-बालिका की पहचान

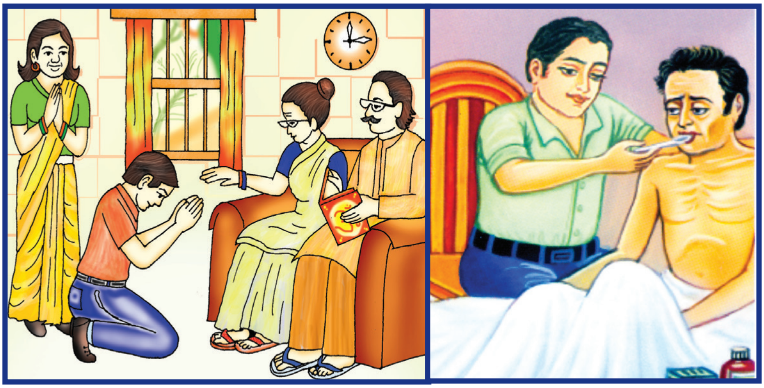

- अण्डे से बने केक, पेस्ट्री, आइसक्रीम, बिस्किट, ब्रेड, चॉकलेट आदि नहीं खाना। मांसाहारी होटल व पार्टियों में भोजन नहीं करना।
- भोजन करते समय झूठा नहीं छोड़ना, दूध, चाय, पानी, रोटी-सब्जी कुछ भी हो। याद रखें- उतना ही लो थाली में, व्यर्थ न जाए नाली में। फास्ट फूड को आदत बनाकर रोज नहीं खाना। इसमें नमक, घी, मैदा की मात्रा अधिक होने से कई रोग हो जाते हैं। बाजार के फास्ट फूड में मसाले भी शुद्ध नहीं होते।
- पक्षियों को पिंजरे में कैद नहीं करना। Aquarium लगाने में भी हिंसा है।
- मोबाइल, टी.वी. आदि अधिक देखने से परहेज करना। इससे आंखें खराब, मोटापा, गलत संस्कार, एकाग्रता-भंग, समय की बर्बादी आदि हानियां होती हैं।
- परस्पर-अभिवादन करते समय या फोन पर बात शुरू करते समय, हाय, हैलो आदि बोलने की आदत छोड़कर 'जय जिनेन्द्र' कहना।
- प्रातःकाल घर के बड़ों के चरण स्पर्श करना और 'जय जिनेन्द्र' बोलना। फोन पर भी 'जय जिनेन्द्र' कहकर अभिवादन करना।

- सभी को आदर-पूर्वक 'आप', 'जी' लगाकर बात करना। किसी को भी गाली नहीं देना। गाली देना असभ्यता का सूचक है।

- अपनी नगरी में साधु-साध्वी विराजमान हों, तो प्रतिदिन दर्शन-लाभ लेना।

- घर में पूजा-कक्ष (Prayer Room) में बैठकर रोज सामायिक या माला-जाप करना। इससे सकारात्मक ऊर्जा (Positive Energy) का संचार होता है।

- शराब, मांस-अण्डा, शिकार, जूआ, बड़ी चोरी, पर-स्त्री तथा वेश्या-गमन, इन सात कुव्यसनों (दुर्गुणों) का जीवन-भर के लिए पूर्ण त्याग रखना। शराब का अर्थ है— शर + आब = तीखा पानी। यह किसी को मूर्ख, किसी को हैवान (हिंसक पशु) और किसी को शैतान बना देती है। इससे आपसी झगड़े, दुर्घटनाएं, जिगर में सिरोसिस रोग, टी.बी., कैंसर और उच्च रक्तचाप जैसी बीमारियां होती हैं।

- चमड़े से बनी वस्तुओं का त्याग रखना। आजकल कत्लखानों में जीवित पशु की खाल खींच कर चमड़ा बनाते हैं। एक गाय या भैंस के चमड़े से 20 जोड़ी जूते-चप्पल तैयार होते हैं। यह अहिंसक जनों के लिए वर्जित है।

- रेशमी वस्त्रों का त्याग करना। यह एक-डेढ़ इंच लम्बे रेशम के कीड़ों को खौलते पानी में उबालकर प्राप्त किया जाता है।

- भिरड़, ततैया, मधुमक्खी आदि के छत्तों में आग नहीं लगाना।

- प्लास्टिक की थैलियों का कम प्रयोग करना। सब्जी खरीदते समय, उसे पोलीथिन में डलवाने की बजाए कपड़े के थैले में डलवाना। बाजार आदि जाते समय घर से कपड़े का थैला साथ लेकर जाना।

जैन ध्वज तथा प्रतीक-चिन्ह

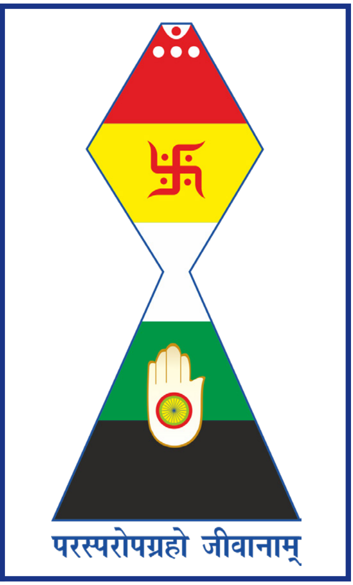

जैन ध्वज :

जैसा कि आप जानते हैं कि सभी देशों का अपना-अपना ध्वज होता है उसी प्रकार संसार के हर धर्म का अपना-2 ध्वज है। अलग-अलग प्रतीक चिह्न है। ध्वज और प्रतीक से उस धर्म की अलग पहचान बनती है।

जैन धर्म का भी अपना विशिष्ट ध्वज व प्रतीक है। जैन ध्वज में नवकार मंत्र के 5 पदों के आधार पर 5 रंग हैं और इनकी अपनी-2 Significance है। इसमें पाँच रंग हैं- लाल, पीला, सफेद, हरा, काला (या नीला)।

जैन प्रतीक :

किसी विशेष प्रकार के चिन्ह या पहचान की निशानी को प्रतीक कहते हैं। जैसे आपने देखा होगा कि बहुत सारी कम्पनियों के, स्कूलों के, कॉलेज के

अपने-2 चिन्ह Logos होते हैं। आप की Shirts पर आपके School का Logo होता है, उसी प्रकार जैन धर्म का भी अपना एक Fixed Logo है। जैन धर्म के Logo की जो Shape है, वह वास्तव में जैन दर्शन की मान्यता के अनुसार संसार का नक्शा (Map) है। इसकी ऊँचाई 14 रज्जू और चौड़ाई 7 रज्जू है [रज्जू मापने की एक इकाई है].

इसे तीन भागों में बाँटा गया है। -अधोलोक (Lower Part of Universe), मध्यलोक (Middle Part of Universe) और उर्ध्वलोक (Upper Part of Universe):

1. Upper Part में देवता रहते हैं,

2. Middle Part में हम मनुष्य व तिर्यंच (पशु, पक्षी) आदि रहते हैं

3. Lower Part में नरक के जीव रहते हैं।

जैन प्रतीक के नीचे एक संस्कृत-सूत्र लिखा है—**परस्परोपग्रहो जीवानाम्**। इसका अर्थ है— संसार के सब जीव एक-दूसरे को सहयोग देने में निमित्त (कारण) बनते हैं।

सन् 1974 में, राजधानी दिल्ली में, भगवान् महावीर के 2500 वें निर्वाण-वर्ष पर, जैन धर्म के सभी सम्प्रदायों के धर्माचार्यों की उपस्थिति में, इस जैन ध्वज व जैन प्रतीक को स्वीकार किया गया था।

भगवान् महावीर स्वामी

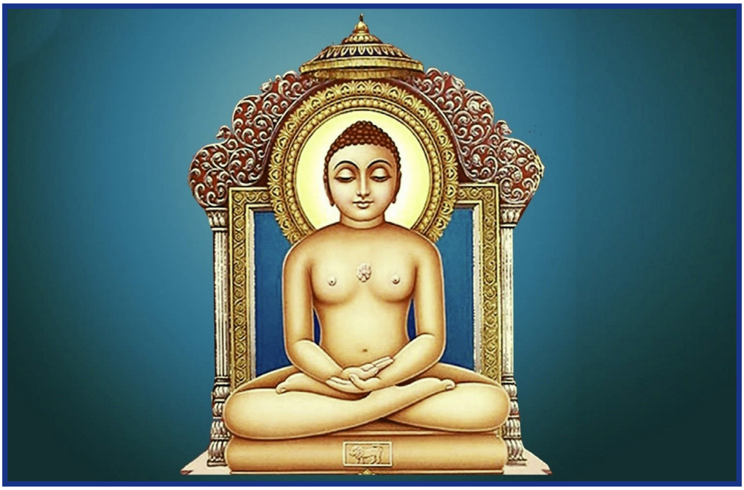

भगवान् महावीर स्वामी, जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर थे। उनका जन्म ईसा से 599 (B.C.) वर्ष पूर्व बिहार में 'क्षत्रिय कुंडग्राम' में मार्च के महीने (चैत्र सुदी त्रयोदशी) में हुआ। उनके माता-पिता का नाम रानी त्रिशला व राजा सिद्धार्थ था। उनके जन्म के बाद राजा सिद्धार्थ के राज्य में धन-धान्य (Wealth) की वृद्धि (Increment) होने से माता-पिता ने 'वर्धमान' नाम रख दिया। आगे चलकर उनका नाम 'महावीर' व 'ज्ञात पुत्र' भी पड़ा।

महावीर बचपन से ही बड़े निर्भीक (Brave) थे। एक बार बच्चों के साथ खेलते हुए बीच में साँप आ गया तो उन्होंने उसे हाथ से उठाकर एक तरफ फेंक दिया। उन्हें जन्म से ही तीन ज्ञान (मति ज्ञान, श्रुत ज्ञान व अवधि ज्ञान) थे।

महावीर आरम्भ से ही वैरागी थे, परन्तु माता-पिता की इच्छानुसार उन्होंने क्षत्रिय कन्या 'यशोदा' से शादी करवा ली और उन्हें एक पुत्री पैदा हुई, जिसका नाम प्रियदर्शना रखा गया। 28 वर्ष की आयु में महावीर के माता-

पिता का देहान्त हो गया और 30 वर्ष की आयु में बड़े भाई नन्दी-वर्धन की आज्ञा से दीक्षा ग्रहण कर ली।

श्रमण महावीर को साधना काल में अनेक कष्ट आए। जैसे एक बार एक ग्वाले ने उन्हें रस्सियों से मारा। एक बार चंड-कौशिक सर्प ने उन्हें डंक मारा। संगम देव ने अनेक कष्ट दिए आदि-2।

श्रमण महावीर को 12½ वर्ष की साधना पूर्ण होने पर, वैशाख सुदी दसवीं को, साढ़े बयालीस वर्ष की आयु में सम्पूर्ण ज्ञान यानि केवल ज्ञान (Complete Knowledge) प्राप्त हुआ। इसके बल से, वे तीनों कालों की, और तीनों लोकों की सभी घटनाओं तथा पदार्थों को जानने लगे और इस प्रकार से अपने 4 घाती कर्मों को खपाकर अरिहंत भगवान् बन गए।

अरिहंत बनने के बाद उन्होंने लोगों को उपदेश देकर साधुव्रतों व श्रावक व्रतों के नियम करवाकर तीर्थ की स्थापना की, अतः वे 'तीर्थंकर' भी कहलाए।

भ. महावीर के साधना काल के कुल 4515 दिनों में 4166 दिन उनकी तपस्या के हैं। उनकी तपस्या हमेशा निर्जल होती थी। पूरे साधना काल में सिर्फ 2 घड़ी (48 Minutes) उन्होंने नींद ली। शेष समय प्रायः मौन और ध्यान में रहते थे।

ईसा पूर्व 527 में, बिहार प्रांत के पावापुरी स्थान पर भ. महावीर स्वामी 72½ वर्ष की आयु में, कार्तिक मास की अमावस्या के दिन निर्वाण (Liberation) को प्राप्त हो गए। उसी दिन की स्मृति में दीपावली पर्व मनाया जाता है।

उनके धर्म-संघ में इन्द्रभूति गौतम आदि 14,000 साधु, चन्दनबाला आदि 36,000 साध्वियां, शंख, शतक आदि 1,59,000 श्रावक, सुलसा, रेवती आदि 3,18,000 श्राविकाएं थी।

भ. महावीर के जीवन पर आधारित कहानियाँ

कहानी 1: चंडकौशिक सर्प–क्रोध से करुणा तक

बहुत समय पहले की बात है। एक घने जंगल में एक भयानक और क्रोधी सर्प रहता था। उसका नाम था चंडकौशिक। वह इतना गुस्सैल था कि जो भी उसके पास से गुजरता, उसे डस लेता। जंगल के सभी जानवर और आसपास के गाँव वाले उससे बहुत डरते थे। कोई भी उस रास्ते से गुजरने की हिम्मत नहीं करता था। लोग कहते थे — "उस सर्प की आँखों में आग है और उसके मन में क्रोध!"

भगवान् महावीर का आगमन

एक दिन उसी रास्ते से महान तीर्थंकर महावीर शांत भाव से ध्यान करते हुए गुजर रहे थे। गाँव वालों ने उन्हें चेतावनी दी— "भगवन् ! उस रास्ते मत जाइए, वहाँ चंडकौशिक सर्प रहता है। वह बहुत क्रोधी है।" लेकिन महावीर स्वामी शांत थे। उनके चेहरे पर करुणा और शांति थी।

सर्प का क्रोध

जब चंडकौशिक ने देखा कि कोई व्यक्ति बिना डर के उसकी ओर आ रहा है, तो वह क्रोध से फुफकारने लगा। वह महावीर स्वामी को डसने के लिए आगे बढ़ा। उसने कई बार डसा... लेकिन आश्चर्य! महावीर स्वामी के चेहरे पर न तो डर था, न दर्द, न क्रोध। वे शांत खड़े रहे। उनकी आँखों में करुणा थी।

परिवर्तन का क्षण

महावीर स्वामी ने प्रेम से कहा— “हे सर्प! क्रोध आग की तरह है। यह पहले दूसरों को नहीं, स्वयं को जलाता है।” उनकी शांत वाणी सुनकर चंडकौशिक का हृदय पिघल गया। उसे अपने पूर्व जन्म की याद आई। उसे समझ आया कि उसका क्रोध ही उसके दुखों का कारण है। वह महावीर स्वामी के चरणों में झुक गया। उस दिन से उसने लोगों को डसना छोड़ दिया।

बच्चों के लिए संदेश

इस कहानी से हमें क्या सीख मिलती है?

1. क्रोध हमें कमजोर बनाता है।
2. शांति सबसे बड़ी शक्ति है।
3. धैर्य और प्रेम से कठोर हृदय भी बदल सकता है।
4. गुस्से का जवाब गुस्से से नहीं, शांत मन से देना चाहिए।

छोटी सी सीख

जब भी आपको गुस्सा आए, तो चंडकौशिक सर्प को याद करना। और सोचो— *“क्या मैं भी अपने गुस्से से खुद को जला रहा हूँ?”* गहरी साँस लो...

कहानी 2: “माँ के लिए लिया गया संकल्प”

बहुत समय पहले की बात है। वैशाली नगरी में एक राजा और रानी रहते थे—राजा सिद्धार्थ और रानी त्रिशला। रानी त्रिशला के गर्भ में एक दिव्य बालक पल रहा था, जो आगे चलकर भगवान् महावीर बने।

एक दिन की बात है। वह बालक अभी माँ के गर्भ में ही था। अचानक उसके मन में एक विचार आया— *“मेरे हिलने-डुलने से मेरी माँ को कहीं कष्ट तो नहीं होता होगा?”*

यह सोचकर उस बालक ने निश्चय किया कि वह अब बिल्कुल शांत रहेगा, ताकि उसकी माँ को कोई तकलीफ न हो।

अब क्या हुआ? बालक ने हिलना-डुलना बंद कर दिया, जैसे कोई गहरी ध्यान अवस्था में बैठा हो।

कुछ समय बीता... रानी त्रिशला को लगा कि आज बच्चा बिल्कुल भी हिल नहीं रहा है। वह घबरा गईं। उनके मन में तरह-तरह के विचार आने लगे— *"क्या मेरे बच्चे को कुछ हो गया?"*

उनकी आँखों में आँसू आ गए। वे बहुत दुखी हो गईं।

गर्भ में स्थित उस बालक ने अपनी माँ का यह दुख महसूस किया। उसने मन ही मन सोचा— *"मेरे कुछ क्षण शांत रहने से ही माँ इतनी दुखी हो गई हैं, तो जब मैं बड़ा होकर इन्हें छोड़कर संन्यास लूँगा, तब माँ को कितना दुःख होगा!"*

तभी उस बालक ने एक दृढ़ संकल्प लिया— "जब तक मेरे माता-पिता जीवित रहेंगे, मैं उनकी सेवा करूंगा और उनके सामने कभी घर छोड़कर नहीं जाऊँगा।"

यह बालक आगे चलकर भगवान् महावीर बने, जिन्होंने अपने माता-पिता के प्रति सच्ची भक्ति और कर्त्तव्य का अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत किया।

सीख (Moral):

1. हमें अपने माता-पिता से प्रेम करना चाहिए।
2. उनकी भावनाओं का ध्यान रखना चाहिए।
3. माता-पिता की सेवा करना हमारा सबसे बड़ा कर्तव्य है।

कहानी 3: "दो साल का प्यार"

बहुत समय पहले की बात है। राजकुमार वर्धमान (जो आगे चलकर भगवान् महावीर बने) अपने साहस, त्याग और संस्कारों के लिए जाने जाते थे।

उन्होंने बचपन से ही एक संकल्प लिया था— *"जब तक मेरे माता-पिता जीवित हैं, मैं घर नहीं छोड़ूँगा और उनकी सेवा करूँगा।"*

समय बीतता गया... वर्धमान जी 28 वर्ष के हो गए। तभी उनके माता-पिता का स्वर्गवास हो गया। अब वे अपने संकल्प से मुक्त हो चुके थे।

एक दिन उन्होंने सोचा— *"अब समय आ गया है कि मैं संसार का त्याग करके सच्चे ज्ञान के मार्ग पर चलूँ।"*

वे अपने बड़े भाई नंदिवर्धन के पास गए और विनम्रता से बोले— *"भैया, अब मैं दीक्षा लेकर श्रमण बनना चाहता हूँ।"*

यह सुनकर नंदिवर्धन जी उदास हो गए। उन्होंने प्यार से कहा— *"वर्धमान, तुमने माता-पिता के लिए 28 साल इंतजार किया। क्या मेरे लिए सिर्फ 2 साल और नहीं रुक सकते? मुझे अभी तुम्हारे सहारे की जरूरत है।"*

वर्धमान जी ने अपने भाई की आँखों में देखा... उनमें प्रेम, चिंता और अपनापन झलक रहा था।

उन्होंने तुरंत निर्णय लिया और मुस्कुराते हुए बोले— *"भैया, आपकी भावना मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण है। मैं 2 साल और रुकूँगा।"*

इस तरह वर्धमान जी ने अपने बड़े भाई की इच्छा का सम्मान किया और अपने त्याग को 2 साल के लिए टाल दिया।

दो साल बाद, उन्होंने शांत मन से दीक्षा ली और आगे चलकर भगवान् महावीर के रूप में पूरे संसार को सत्य और अहिंसा का मार्ग दिखाया।

सीख (Moral):

1. हमें अपने बड़ों का सम्मान करना चाहिए।
2. उनकी बात को ध्यान से सुनना और मानना चाहिए।
3. सच्चा महान वही है, जो अपने निर्णयों में भी परिवार की भावनाओं का आदर करे।

Jain Poem

Very Sweet Very Sweet
Jain Dharam

We Love We Love
Jain Dharam

Live & Let Live
Jain Dharam

Forget Forgive
Jain Dharam

Never Fight Never Fight
Jain Dharam

Ever Bright Ever Bright
Jain Dharam

Do Good Do Good
Jain Dharam

Be Good Be Good
Jain Dharam

Lord Mahavira

1. Very Great, Very Great- Lord Mahavir
   Very Compassionate -Lord Mahavir
2. Obedient, Brilliant-Lord Mahavir
   Brilliant, Obedient-Lord Mahavir
3. No Fight, Pure light-Lord Mahavir
   Pure light, No Fight-Lord Mahavir
4. Silent, Omniscient-Lord Mahavir
   Omniscient, Silent -Lord Mahavir
5. Supreme, High Theme - Lord Mahavir
   High Theme, Supreme- Lord Mahavir
6. Sharing, Caring - Lord Mahavir
   Caring, Sharing- Lord Mahavir
7. Blissful, Merciful - Lord Mahavir
   Merciful, Blissful -Lord Mahavir
8. Very High, Sky High -Lord Mahavir
   No-1 or My- Lord Mahavir
9. Pure Soul, Our Goal -Lord Mahavir
   Our Goal, Pure Soul - Lord Mahavir
10. Fasting, Fasting-Lord Mahavir
    Ever Ever-lasting-Lord Mahavir
11. Very Brave, No Crave - Lord Mahavir
    No Crave, Very Brave - Lord Mahavir
12. Live & Let live -Lord Mahavir
    Forget, Forgive- Lord Mahavir
13. Day & Night-Lord Mahavir
    Always Right-Lord Mahavir
14. Very Near, Very Dear- Lord Mahavir
    No Fear, No Tear- Lord Mahavir
15. Wonderful, Mindful - Lord Mahavir
    Mindful Wonderful -Lord Mahavir
16. Rising, Shining - Lord Mahavir
    Shining, Rising - Lord Mahavir
17. Super Moon, Super Moon - Lord Mahavir
    Give Boon, Get Boon -Lord Mahavir
18. Our Father, Our Mother-Lord Mahavir
    Our Sister, Our Brother-Lord Mahavir

प्राकृत भाषा की वर्णमाला

प्राकृत भाषा में Sorry के लिए 'मिच्छामि दुक्कडं' कहें।

मिच्छामि दुक्कडं

Thankyou के लिए 'धण्णवाओ' कहें।

धण्णवाओ

1 व्यावहारिक वाक्य
(Practical Sentences)

व्यावहारिक वाक्य

1.	जय जिनेन्द्र !	Jai Jinendra!	जयउ जिणिंदो !
2.	शुभ प्रभात !	Good Morning!	सुप्पभायं अत्थु !
3.	शुभ मध्यान्ह !	Good Afternoon!	सुमज्झण्हं होउ !
4.	शुभ संध्या !	Good Evening!	सुसंझा भवउ !
5.	शुभ रात्रि !	Good Night!	सुरयणी हवेज्ज !
6.	नमस्ते !	I bow to you!	नमोत्थु ते !
7.	कैसे हो ?	How are you?	कहं अणुहवसि ?
8.	ठीक हूं।	I am fine.	कुसली अहं।
9.	भगवान की कृपा है।	Blessing of God.	पहुणो किवा अत्थि।
10.	बैठिए	Please, Sit here.	आसहि
11.	शाबाश	Very Good.	**साहु! साहु!**
12.	आपका धन्यवाद	Thankyou	धण्णवाओ भवंताणं
13.	माफ कीजिए।	Sorry	मिच्छामि दुक्कडं।

उपर्युक्त वाक्यों को याद करें व इनका प्रयोग करें।

1

जैन आगमों के मुख्य सूत्र

Chew Something New

(Short, Sweet & Powerful Chants)

1. सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु

सिद्ध भगवान् मुझे सिद्धि (मोक्ष) का रास्ता दिखाएँ।

O God! Lead me on the path of Self Realization.

2. नमो जिणाणं जियभयाणं

भय को जीतने वाले जिनेन्द्र भगवान् को नमस्कार।

I bow to the Jinas who are the conquerors of fear.

3. संती संतिकरे लोए

शांतिनाथ प्रभु दुनिया में शांति करने वाले हैं।

Lord Shantinath is the Founder of Peace in the world.

4. साहु गोयम! पण्णा ते

हे गौतम! आपकी बुद्धि महान् है।

Dear Gautam! Your wisdom is great.

5. मित्ती मे सव्वभूएसु

मेरी सभी जीवों से मित्रता है।

I am friendly towards all the living beings.

6. आरुग्ग बोहिलाभं समाहिवरमुत्तमं दिंतु

(हे प्रभो!) मुझे आरोग्य, शांति एवं धर्म प्रदान करें।

Dear God! Bless me with :-
1. Physical Health 2. Mental Peace 3. Spiritual Development

7. दाणाण सेट्ठं अभयप्पयाणं

अभय दान सबसे बड़ा दान है।

Giving Safety is the best of gifts.

8. समयं गोयम! मा पमायए

समय मात्र का भी प्रमाद मत करो।

Don't waste a single moment.

9. अप्पणा सच्चमेसेज्जा

स्वयं सत्य की खोज करो।

Discover the truth by yourself.

10. धम्मो मंगलमुक्किट्ठं

धर्म उत्कृष्ट मंगल है।

Spirituality is the best blessing.

11. जैनं जयतु शासनम्

जैन धर्म की जय हो।

May Jainism's Victory prevail.

12. अभयंकरे वीरे अणंतचक्खू

भगवान् महावीर अनंत ज्ञान के धारक एवं भय को दूर करने वाले थे।

Lord Mahavira had infinite knowledge &
was eliminator of fear.

1. जन्मदाता, विद्यादाता एवं धर्मदाता की सेवा सदा फलदायी होती है।
2. बोलने के तरीके से इंसान की सज्जनता का पता लगता है।
3. आगम सब व्यथाओं का ईलाज है।
4. ज्ञानवान बनने की अपेक्षा चारित्रवान बनना श्रेष्ठ है।
5. अपनी चिंता अपने ही विचारों से खत्म होगी।
6. सात कुव्यसनों से दूर रहने वाला ही अच्छा इंसान बन सकता है।
7. विद्या पाने का लक्ष्य है सत्य को पाना।
8. जहाँ विश्वास नहीं, वहाँ डर है।
9. अगर बड़ों को गुस्सा दिला रहे हो तो समझो अपने ही पुण्य का क्षय कर रहे हो।
10. यदि सामायिक नहीं करते तो समझो अभी भगवान् का धर्म नहीं फरसा।
11. जो शिष्य सुपात्र है, वह दो बातें कभी नहीं करेगा 1. गुरु की अविनय 2. गुरु की निंदा

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

जैन संस्कार शिविर समिति, दिल्ली
के मुख्य उद्देश्य

1. जैन धर्मानुसार जीवन-शैली अपनाकर आनन्द-युक्त जीवन (blissful life) बनाना।
2. जैन धर्म के समृद्ध इतिहास, संस्कृति, दर्शन और साधना पद्धति को अत्यन्त सरल व आधुनिक तकनीक से सिखाना।
3. सम्प्रदाय-निरपेक्ष धर्म की सही जानकारी देना।
4. परिवार, समाज व राष्ट्र के प्रति वफादार और जागरूक नागरिक तैयार करना।
5. स्वाध्याय-शील बनने की प्रेरणा देना।
6. भय-मुक्त धार्मिक क्रियाओं की तरफ प्रेरित करना।

भाग-1